शक्ति हाथ में हो, फिर भी मुरली बजे तो वह कृष्ण है

(कृष्ण केवल भगवान नहीं, जीवन जीने की कला है)

न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व जितना विराट है, उतना ही रहस्यमय भी । उन्हें कोई बालकृष्ण के रूप में देखता है, कोई गोपाल के रूप में, कोई प्रेम के प्रतीक के रुप में, कोई योगेश्वर के रूप में और कोई महाभारत के महान नीतिज्ञ के रूप में । लेकिन इन सभी रूपों के पीछे एक बात समान है । असीम शक्ति होते हुए भी अहंकार का अभाव ।

कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र था, लेकिन हाथ में मुरली भी थी । वे युद्ध को समाप्त करने की क्षमता रखते थे, लेकिन जहाँ संभव हुआ वहाँ शांति का मार्ग चुना । वे राजाओं के राजा बनने की क्षमता रखते थे, लेकिन स्वयं को सारथी बनाने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं था। यही कृष्ण की सबसे बड़ी विशेषता है ।

पहली गाली पर सिर काट देने की शक्ति होने के बाद भी सौ गालियाँ सुनने की सामर्थ्य हो– तो वह "कृष्ण" है ।

शिशुपाल के बार– बार अपमान करने के बाद भी यदि कृष्ण चाहते तो पहली ही बार उसे दण्ड दे सकते थे । उनके पास शक्ति थी, अधिकार था और अवसर भी था, लेकिन उन्होंने अपनी शक्ति को क्रोध का साधन नहीं, न्याय का साधन बनाया । उन्होंने सीमा निर्धारित की और सौ अपराधों तक क्षमा की ।

यह हमें बहुत बड़ा संदेश देता है–क्षमा वही कर सकता है, जिसके पास दण्ड देने की शक्ति हो ।

जिसके पास प्रतिकार करने की क्षमता ही नहीं, उसकी मजबूरी को क्षमा समझ लेना भूल है । वास्तविक क्षमा वह है, जहाँ शक्ति होते हुए भी व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण रखे ।

सुदर्शन चक्र हाथ में होने के बाद भी यदि हाथ में हमेशा "मुरली" हो– तो वह "कृष्ण" है।

"सुदर्शन" कृष्ण की शक्ति का प्रतीक है और "मुरली"उनके प्रेम का ।

एक हाथ में संसार को बदल देने की शक्ति और दूसरे हाथ में हृदय को जीत लेने वाला संगीत –यही "कृष्ण" है ।

आज मनुष्य के पास थोड़ी– सी शक्ति आती है तो वह उसका प्रदर्शन करने लगता है। धन आया तो अहंकार, पद मिला तो व्यवहार बदल गया, अधिकार मिला तो दूसरों को छोटा समझने लगा ।

कृष्ण सिखाते हैं– शक्ति का अर्थ दूसरों को डराना नहीं, बल्कि दूसरों को सुरक्षित रखना हैं ।

इसलिए कृष्ण के हाथ में सुदर्शन होने के बावजूद उनकी पहचान "मुरली" से अधिक हुई । क्योंकि संसार ने उनकी शक्ति से अधिक उनके प्रेम और मधुरता को याद रखा ।

द्वारिका का वैभव मिलने के बाद भी यदि "सुदामा"मित्र ही रहे– तो वह "कृष्ण" है ।

कृष्ण और सुदामा की मित्रता संसार की सबसे सुंदर मित्रताओं में से एक है । एक ओर द्वारिका का वैभव, राजसी प्रतिष्ठा और अपार संपन्नता, दूसरी ओर निर्धन सुदामा । लेकिन कृष्ण के लिए मित्र की आर्थिक स्थिति का कोई महत्व नहीं था । सुदामा के पास देने के लिए कुछ विशेष नहीं था,फिर भी कृष्ण ने उनके प्रेम को स्वीकार किया ।

यही सच्ची मित्रता हैः– जहाँ जेब नहीं, दिल देखा जाए,

जहाँ पद नहीं, व्यक्ति देखा जाए,

जहाँ वर्तमान नहीं, पुराना संबंध देखा जाए

वहाँ कृष्ण जैसी मित्रता जन्म लेती है ।

आज अक्सर मित्रता भी स्वार्थ और हैसियत देखकर होने लगी हैं। व्यक्ति बड़ा हो गया तो पुराने मित्र छोटे लगने लगे । पद बदल गया तो व्यवहार बदल गया । पैसा बढ़ गया तो रिश्तों की कीमत घट गई ।

कृष्ण का जीवन हमें याद दिलाता हैं – "समय बदल सकता है, परिस्थितियाँ बदल सकती है, पद बदल सकते हैं, लेकिन सच्चे संबंधों का मूल्य नहीं बदलना चाहिए ।"

मुकुट पर मोरपंख हो, लेकिन सिर पर अहंकार न हो –तो वह "कृष्ण " है । कृष्ण के सिर पर मुकुट है, लेकिन उस मुकुट से अहंकार नहीं झलकता ।

यह बहुत बड़ी बात है । सच्चा बड़ा व्यक्ति वह नहीं जिसके सिर पर मुकुट हो, बल्कि वह है जिसके सिर में अहंकार न हो ।

आज हम छोटी –सी उपलब्धि को भी अपने अहंकार का कारण बना लेते हैं । कृष्ण का वैभव असीम था, फिर भी उनका व्यवहार सहज थां ।

मोरपंख हमें जैसे यह संदेश देता है– ऊँचाई कितनी भी मिल जाए , मनुष्य को अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए ।

राजा बनने की क्षमता होते हुए भी यदि "सारथी" बनने में संकोच न हो– तो वह "कृष्ण" है ।

महाभारत का वह दृश्य कितना अद्भुत है– जिस कृष्ण के चरणों में बड़े–बड़े राजा नतमस्तक होते हैं, वही कृष्ण अर्जुन के रथ के सारथी बनते हैं ।

सारथी का काम क्या है ? दूसरे के रथ को दिशा देना । कृष्ण ने केवल अर्जुन का रथ नहीं चलाया, बल्कि अर्जुन के जीवन को भी दिशा दी ।

जब अर्जुन युद्धभूमि में मोह और भ्रम से घिर गया , तब कृष्ण ने उसे गीता का ज्ञान दिया । उन्होंने बताया कि जीवन में केवल भावनाओं के आधार पर निर्णय नहीं लिए जा सकते, कर्त्तव्य,सत्य और धर्म का भी विचार करना पड़ता है ।

इसलिए कृष्ण केवल युद्ध के सारथी नहीं थे –वे मानव जीवन के सारथी थे और आज भी हैं ।

प्रेम हो, लेकिन मोह न हो – तो वह "कृष्ण " है ।

कृष्ण का जीवन प्रेम से भरा हुआ है, लेकिन उनका प्रेम उन्हें कर्त्तव्य से विमुख नहीं करता यही प्रेम और मोह का अंतर है ।

मोह कहता है– " मेरा अपना है, इसलिए सही है । "

कृष्ण की नीति कहती है– "जो धर्म के साथ है, वही सही है ।"

कृष्ण ने कभी संबंधों को धर्म से ऊपर नहीं रखा । उन्होंने यह नहीं देखा कि सामने कौन है, उन्होंने यह देखा कि सत्य किसके साथ है ।

आज परिवारों में अनके विवाद केवल इसलिए होते हैं क्योंकि हम सत्य से पहले अपने व्यक्ति को देखते हैं। " वह मेरा बेटा है ।", " वह मेरा भाई है ।", " वह मेरा रिश्तेदार हैं", "वह मेरा अपना है ।" लेकिन कृष्ण हमें सिखाते हैं कि अपनापन महत्वपूर्ण है, पर सत्य और धर्म उससे भी ऊपर है ।

शांति का प्रस्ताव लेकर जाएँ,लेकिन अधर्म के सामने झुके नहीं– तो वह "कृष्ण" है ।

कृष्ण ने युद्ध को पहली पसंद नहीं बनाया । उन्होंने शांति का प्रयास किया । लेकिन जब अधर्म ने न्याय देने से इनकार कर दिया, तब धर्म की रक्षा के लिए युद्ध अपरिहार्य

हुआ । इससे एक बहुत बड़ा जीवन – संदेश मिलता है – शांति का अर्थ कमजोरी नहीं है तथा युद्ध का अर्थ हमेशा हिंसा नहीं है ।

कभी– कभी अन्याय के सामने खड़ा होना भी धर्म है । अन्याय को सहते रहना शांति नहीं, बल्कि अन्याय को बढ़ावा देना है ।

इसलिए कृष्ण का संदेश है– पहले समझाओ, फिर अवसर दो, फिर चेतावनी दो, लेकिन जब अधर्म अपनी सीमा पार कर जाए, तो धर्म की रक्षा के लिए दृढ़ निर्णय लेना भी आवश्यक है ।

कृष्ण हमें क्या सिखाते हैं ?

कृष्ण का जीवन यदि ध्यान से देखा जाए तो उसमें जीवन के लगभग हर प्रश्न का उत्तर दिखाई देता है– शक्ति मिले तो संयम रखो । धन मिले तो विनम्र रहो । पद मिले तो सेवा करो । मित्र मिले तो सुदामा को मत भूलों । ज्ञान मिले तो अहंकार मत करो । प्रेम मिले तो उसे पवित्र रखो। अपमान मिले तो हर बार क्रोध मत करो । अन्याय दिखे तो आँखें मत मूँदो । जब धर्म संकट में हो, तो सत्य के पक्ष में खड़े होने से मत डरो यही कृष्ण है ।

वे हमें यह नही सिखाते कि जीवन में संघर्ष नहीं होगा । वे सिखाते हैं कि संघर्ष के बीच अपना विवेक कैसे बचाए रखना हैं । वे यह नहीं कहते कि तुम्हारे पास शक्ति न हो, बल्कि वे कहते हैं कि शक्ति हो, पर शक्ति का स्वामी विवेक हो । वे यह नहीं कहते कि धन मत कमाओ, वे बताते हैं कि धन तुम्हारे पास रहे,लेकिन तुम्हारे मन पर अधिकार न कर ले । वह यह नहीं कहते कि संबंध छोड़ दो, वे सिखाते हैं कि संबंध निभाओ, लेकिन सत्य और धर्म को गिरवी रखकर नहीं ।

इसीलिए कृष्ण अद्‌भुत है :–

हाथ में सुदर्शन था, फिर भी मुरली बजाई ।

सामर्थ्य अपार था, फिर भी विनम्रता अपनाई ।

राजसी वैभव था, फिर भी सुदामा को गले लगाया ।

महान ज्ञान था, फिर भी स्वयं सारथी बन गए ।

प्रेम अथाह था, फिर भी धर्म से समझौता नहीं किया ।

शांति चाहते थे, फिर भी अधर्म के सामने झुके नही ।

और शायद कृष्ण के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा संदेश यही है –

"शक्ति रखना बुरी बात नहीं, शक्ति का अहंकार करना बुरा है । धन रखना बुरा नहीं,धन का अहंकार करना बुरा है । ज्ञान पाना बुरा नहीं, दूसरों को छोटा समझना बुरा है, और प्रेम करना बुरा नहीं, प्रेम से सत्य और धर्म को खो देना बुरा है ।"

इसलिए –जिसके हाथ में सुदर्शन हो और फिर भी मुरली बजे, जिसके पास सामर्थ्य हो और फिर भी क्षमा हो, जिसके पास वैभव हो और फिर भी सुदामा अपना हो, जिसके पास ज्ञान हो और फिर भी विनम्रता हो, जिसके पास अधिकार हो और फिर भी सेवा का भाव हो।

यही कृष्ण है ।

कृष्ण केवल पूजा करने के लिए नहीं, कृष्ण को समझने और अपने जीवन में उतारने के लिए है । और जब मनुष्य कृष्ण को अपने आचरण में उतार लेता है, तब उसके हाथ में शक्ति होते हुए भी हृदय में मुरली बजती रहती है । यही कृष्णत्व है ।